उद्योग एक वैयक्तिक लूटमार है'' और व्यक्तिगत सम्पत्ति को सामाजिक अथवा सामूहिक सम्पत्ति का रूप देना ही श्रेयस्कर है। ब्लैचफोर्ड (Blacthford) के शब्दों में, '**भूमि तथा उत्पादन के सभी साधनों को राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दो। सारे खेतों, खानों, जहाजों तथा रेलों को राष्ट्रीय नियन्त्रण में रख दो, फिर बस व्यावहारिक समाजवाद पूरा हो जाएगा।**''

(7) **समाजवाद व्यक्ति की अपेक्षा समाज को प्राथमिकता देता है**—एक समष्टिमूलक दर्शन होने के नाते समाजवाद का विचार है कि सम्पूर्ण समाज का सामूहिक हित अकेले व्यक्ति के हित से कहीं अधिक मूल्यवान है और आवश्यकता पड़ने पर समष्टि के हित में व्यक्ति के हित का बलिदान किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में समाजवादियों का विचार है कि सामूहिक हित में व्यक्तिगत हित निहित होता है और सामूहिक हित की साधना से व्यक्तिगत हित की साधना स्वयमेव ही हो जाती है।

(8) **समाजवाद राज्य को एक सकारात्मक गुण मानता है**—समाजवाद व्यक्तिवाद के इस कथन को अस्वीकार करता है कि '**राज्य एक आवश्यक दुर्गुण है**' और इसके विपरीत राज्य को एक ऐसी कल्याणकारी संस्था मानता है, जिसका जन्म ही नागरिकों के जीवन को सभ्य और सुखी बनाने के लिए होता है। अधिकांश समाजवादी इतिहास से उदाहरण देते हुए कहते हैं कि राज्य संस्था चिर काल से मानव जाति की सेवा करती चली आ रही है और यदि इसने कहीं बल को प्रयोग किया भी है तो सामूहिक हित के लिए ही। इस प्रकार साधारणतया समाजवादी राज्य को एक जनहितकारी सकारात्मक अच्छाई मानते हैं।

(9) **समाजवादी राज्य को अधिकाधिक कार्य समर्पित करना चाहते हैं**—समाजवादी राज्य को एक कल्याणकारी संस्था मानते हैं और व्यक्ति को अधिकाधिक स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए राज्य के कार्यक्षेत्र को व्यापक करना चाहते हैं। समाजवाद के अनुसार व्यक्तिवादी पुलिस राज्य समाज की पूरी-पूरी भलाई नहीं कर सकता और इस पुलिस राज्य में 90 प्रतिशत जनता पूंजीवादी शोषण से पिसकर अपने प्राण दे देगी। ऐसी स्थिति में गरीबों और मजदूरों के हित में राज्य के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में हस्तक्षेप किया जाना चाहिए। समाजवादियों के अनुसार, आधुनिक राज्यों को व्यक्ति की समस्याओं में अधिक-से-अधिक रुचि लेनी चाहिए, तभी वह एक वास्तविक लोकहितकारी राज्य का रूप धारण कर सकता है।

इस प्रकार समाजवाद व्यक्तिवाद के विरुद्ध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा वैयक्तिक हित के स्थान पर सामूहिक और प्रतिस्पर्द्धा के स्थान पर सहयोग को प्रतिष्ठित करके, उत्पादन के साधनों पर सामाजिक नियन्त्रण की पद्धति से आर्थिक समानता स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है।

समाजवाद का मूल्यांकन

व्यक्तिवाद के प्रभाव से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना हुई, जिसके अन्तर्गत उत्पादन में वृद्धि होने के साथ-साथ सम्पत्ति का अधिकाधिक केन्द्रीयकरण होने लगा और पूंजीपतियों व श्रमिकों के विरोधी वर्ग निर्मित हो गये। व्यक्तिवाद के इन दोषों की प्रतिक्रिया के रूप में समाजवादी विचारधारा का उदय हुआ, जिसने समानता के सिद्धान्त को प्रतिष्ठित करते हुए शोषण के विरुद्ध आवाज उठायी, परन्तु समाजवादी व्यवस्था का जो व्यावहारिक रूप हमारे समक्ष आया है उसे भी पूर्णतया दोष-रहित नहीं कहा जा सकता है। अतः समाजवादी सिद्धान्त व व्यवस्था के पक्ष और विपक्ष दोनों का ही अध्ययन किया जाना चाहिए।